UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 13 आल्हा-ऊदल (महान व्यक्तिव)

पाठ का सारांश

आल्हा और ऊदल सगे भाई थे। इनके पिता का नाम देशराज सिंह एवं माता का नाम देवल था। देशराज के एक और सगे भाई वत्सराज थे। माड़वगढ़ की लड़ाई में माड़वगढ़ के राजा कलिंगराय ने धोखे से रात्रि में दोनों भाइयों देशराज और वत्सराज को बंदी बना लिया और दोनों की नृशंस हत्या कर दी। उस समय आल्हा और ऊदले दोनों बहुत छोटे थे। पिता की युद्ध में मृत्यु के बाद आल्हा और ऊदल का पालन-पोषण महोबा के चंदेल शासक परमाल के महल में उनकी रानी मल्हना द्वारा किया गया। किशोरावस्था में आते-आते दोनों भाई बरछी, बाण, कृपाल एवं घुड़सवारी की कला में दक्ष हो गए।

एक दिन अचानक ऊदल को अपने पिता की मृत्यु के बारे में पता चला कि उनकी हत्या की गई थी। आक्रोशित ऊदल ने माता देवल से सच्चाई जाननी चाही। माता ने अपने पुत्रों को युद्ध से बचाने के लिए पिता की बीमारी से मृत्यु होने की बात बताई थी। ऊदल के बार-बार पूछने पर विवश होकर माता ने पिता की हत्या का सारा वृतांत सुनाया। अपने पिता की हत्या का बदला लेने के लिए ऊदल ने अपने बड़े भाई आल्ही के साथ महोबा की सेना लेकर माड़वगढ़ पर चढ़ाई कर दी। दोनों भाइयों ने युद्ध में पिता के हत्यारे और माड़वगढ़ के राजा । कलिंगराय को पराजित कर दिया। कलिंगराय द्वारा क्षमा माँगने पर दोनों भाइयों ने उसे जिंदा छोड़ दिया लेकिन अपनी अधीनता स्वीकार कराई।

दोनो भाइयों की वीरता पर लिखी गई पुस्तक आल्हखण्ड में इन दोनों वीर भाइयों की 52 लड़ाइयों की गाथा वर्णित है। दोनों भाई एक से बढ़कर एक बहादुर थे। आल्हा धीर-वीर एवं ओजस्वी थे। ऊदल उग्र एवं दृढ़ निश्चयी वीर योद्धा थे। पृथ्वीराज चौहान द्वारा महोबा पर आक्रमण के समय हुए भयानक एवं विध्वंसकारी युद्ध में ऊदल वीरगति को प्राप्त हो गए। अब आल्हा का मन निराशा से भर गया। युद्ध के बाद आल्हा का हृदय परिवर्तन हुआ और उन्होंने आदि शक्ति की भक्ति में स्वयं को समर्पित कर दिया।

https://www.evidyarthi.in/